मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 3

MSKE–010

स्नातकोत्तर कला उपाधि (संस्कृत)

(एम. एस. के.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2025

एम.एस.के.ई.-010 : तृतीय पत्र : दर्शनशास्त्र, ब्रह्मसूत्र, योगसूत्र, न्यायसूत्र

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *(i) यह प्रश्न-पत्र दो खण्डों में विभाजित है। दोनों खण्ड अनिवार्य हैं।*

(ii) खण्डों में दिए गए निर्देशों के अनुसार ही उत्तर दीजिए।

खण्ड—क

नोट : *निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के विस्तृत रूप से उत्तर दीजिए। प्रत्येक के लिए 20 अंक निर्धारित हैं।* $3 \times 20 = 60$

1. 'अथातो ब्रह्म जिज्ञासा' सूत्र एवं 'जन्माद्यस्य यतः सूत्रस्य तात्पर्यम्' का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

2. योग दर्शन क्या है ? योग के अंग कौन–कौन से हैं ? योग के लक्षणों सहित विस्तृत रूप से व्याख्या कीजिए।
3. चित्तवृत्तियों के प्रकार, स्वरूप एवं उसके निरोध पर विस्तारपूर्वक लिखिए।
4. नव्य न्याय के उद्‌भव और विकास का वर्णन करते हुए नव्य न्याय की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।
5. 'पदार्थ' शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसके उद्देश्य पर प्रकाश डालिए तथा षोडश पदार्थों का वर्णन कीजिए।
6. न्याय दर्शन और उसके साहित्य का वर्णन करते हुए न्याय दर्शन की व्यापक उपयोगिता का विस्तृत रूप से वर्णन कीजिए।

खण्ड—ख

नोट : *निम्नलिखित में से किन्हीं* ***चार*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक के लिए 10 अंक निर्धारित हैं।* $4 \times 10 = 40$

7. 'शास्त्रयोनित्वात्' सूत्र की विस्तृत रूप से व्याख्या कीजिए।
8. 'आत्मा, शरीर और इन्द्रिय' के सन्दर्भ से प्रमेय निरूपण को स्पष्ट कीजिए।
9. तर्क, निर्णय, वाद, जल्प और वितण्डा का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

10. संशय, प्रयोजन, दृष्टान्त सिद्धान्त और अवयव का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

11. त्रिविध शास्त्रप्रवृत्ति को स्पष्ट कीजिए।

12. चित्तविक्षेप एवं चित्त के परिकर्म को स्पष्ट कीजिए।

13. 'समन्वयाधिकरण' सूत्र की व्याख्या कीजिए।

14. अध्यास भाष्य की व्याख्या कीजिए।

× × × × ×